कलीसिया की सेवा में स्त्रियों के विरुद्ध दिए जाने वाले तर्क बाइबलीय क्यों नहीं हैं

बेन विदरिंगटन III (Ben Witherington III) · जर्मन अनुवाद: Hans-Jörg Ronsdorf · अप्रैल 2021 · अक्टूबर 2026 में संशोधित

बेन विदरिंगटन III एस्बरी थियोलॉजिकल सेमिनरी (Asbury Theological Seminary, विल्मोर, केंटकी) में Amos Professor of New Testament for Doctoral Studies हैं और यूनाइटेड मेथोडिस्ट चर्च (United Methodist Church) के अभिषिक्त (ऑर्डेन्ड) पास्टर हैं।

आप में से अधिकांश, जो मुझे जानते हैं, यह जानते हैं कि मैंने इंग्लैंड के डरहम विश्वविद्यालय में सी. के. बैरेट (C.K. Barrett) के अधीन नए नियम में स्त्रियों के विषय पर अपना डॉक्टरेट शोध-प्रबंध लिखा। मेरी पहली तीन प्रकाशित विद्वत्तापूर्ण पुस्तकें ठीक इसी विषय पर थीं। तीस से कुछ अधिक वर्ष पहले ऐसा करने का एक कारण वह विवाद था, जो उस समय सेवा में स्त्रियों के प्रश्न पर, और विशेष रूप से मंच पर प्रचारिकाओं और मुख्य पास्टरों के रूप में स्त्रियों के प्रश्न पर, ज़ोरों से चल रहा था। इस बात को छोड़ भी दें कि बाइबल में "मुख्य पास्टर" या "प्रचारक" जैसी कोई श्रेणियाँ नहीं हैं, तो भी नए नियम का बार-बार प्रयोग सेवा में स्त्रियों के दमन को उचित ठहराने के लिए किया गया – और, जैसा कि मुझे वर्षों के शोध और अध्ययन से पता चलना था, बिना किसी बाइबलीय आधार के। निश्चय ही समान रूप से सच्चे मसीही इस प्रश्न पर भिन्न मत रख सकते हैं, परन्तु मतभेद बाइबल के पाठों की ठोस व्याख्या के आधार पर होने चाहिए, न कि भावनाओं, वाक्पटुता, केवल किसी कलीसियाई नियमावली, संदिग्ध व्याख्या-शास्त्र (हर्मेन्यूटिक्स) और ऐसी ही बातों के आधार पर।

इसलिए इस लेख में मैं आत्मिक सेवा/पद में स्त्रियों के विरुद्ध दी जाने वाली सामान्य आपत्तियों पर एक-एक करके विचार करूँगा। इनमें से कुछ आपत्तियाँ उच्च-कलीसियाई परंपरा से आती हैं, कुछ अधिकतर "low-church" परंपराओं से, कुछ कैथोलिक या ऑर्थोडॉक्स हैं, कुछ प्रोटेस्टेंट, परन्तु हम इन सब में से कुछ चुनी हुई आपत्तियों को लेंगे, पूर्ण या थका देने वाला होने का प्रयास किए बिना।

1) स्त्रियाँ याजिकाएँ (पुरोहित) नहीं हो सकतीं, क्योंकि केवल पुरुष ही ऐसे याजक हो सकते हैं, जो मिस्सा का बलिदान चढ़ाएँ, आदि।

इस तर्क की मूल समस्या यह है कि नया नियम बिल्कुल स्पष्ट कहता है कि नए नियम में प्रेरित, भविष्यद्वक्ता, शिक्षक, सुसमाचार-प्रचारक, प्राचीन, सेवक (डीकन) याजक नहीं हैं। नए नियम में किसी अलग याजक-वर्ग की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि मसीह के बलिदान ने याजकों, मंदिरों और बलिदानों वाली पुराने नियम की पूरी याजकीय व्यवस्था को अप्रचलित कर दिया है। नए नियम में हम केवल इन याजकीय पदों के विषय में सुनते हैं:

1. सब विश्वासियों का याजकपद, जिसमें स्वाभाविक रूप से स्त्रियाँ भी सम्मिलित हैं, और
2. मसीह का स्वर्गीय महायाजकपद (देखें इब्रानियों)।

इन दोनों के बीच कोई नया याजकपद नहीं है, जो पुराने नियम से स्थानांतरित किया गया हो या नए नियम के युग में स्थापित किया गया हो। वास्तव में नए नियम में बलिदान और मंदिर की पूरी भाषा को आत्मिक अर्थ दिया गया है, ताकि वह हमारे आत्म-समर्पण या परमेश्वर की स्तुति से संबंधित हो, और नए नियम में विभिन्न स्थानों पर (तुलना करें 1 कुरिन्थियों 3-6) मंदिर का वर्णन या तो विश्वासी के शरीर के रूप में किया गया है या मसीह के पूरे समुदाय

के रूप में, जिसमें मसीह और आत्मा वास करते हैं। यहाँ की समस्या मूलतः व्याख्या-शास्त्र की समस्या है। किसी समय, लगभग तब जब कॉन्स्टेंटाइन के अधीन कलीसिया एक अनुमत धर्म (religio licita) बनी, पुराने नियम वाली व्याख्या-पद्धति हावी हो गई – एक ऐसी व्याख्या-पद्धति, जो गिरजाघरों को मंदिर, प्रभु-भोज को बलिदान, पदाधिकारियों को याजक, प्रभु के दिन को सब्त, और इसी प्रकार की बातें मानती थी। इससे नई वाचा की नवीनता और उसके पहलुओं और विशेषताओं का बहुत बुरा अहित हुआ, और अंतिम परिणाम यह हुआ कि स्त्रियों को विभिन्न पदों से बाहर कर दिया गया, **और वह भी ऐसे कारणों से, जिन्हें नए नियम के लेखक सिरे से अस्वीकार कर देते।**

2) स्त्रियाँ पास्टर नहीं हो सकतीं, क्योंकि तब वे पुरुषों पर, अपने पतियों पर भी, सिर बन जाएँगी – और यह कभी नहीं हो सकता तथा नए नियम की घरेलू व्यवस्थाओं (गृहस्थ-निर्देशों की सूचियों) का उल्लंघन है।

यह तर्क अक्सर जटिल होता है, और अपने मूल में यह इस बात की एक गंभीर उलझन है कि नया नियम शारीरिक परिवार और घर की व्यवस्था के विषय में क्या कहता है, और विश्वास के परिवार की व्यवस्था के विषय में क्या कहता है, चाहे वह कहीं भी एकत्र हो। यह निश्चय ही सच है कि उदाहरण के लिए कुलुस्सियों 3-4 और इफिसियों 5-6 जैसे पाठ और 1 पतरस के दूसरे पाठ शारीरिक परिवार की संरचना के विषय में बात करते हैं। जैसा मैंने विस्तार से तर्क दिया है, पितृसत्तात्मक परिवार नए नियम के संसार की विद्यमान वास्तविकता था, और जब कोई तुलना करता है कि नए नियम में क्या है और नए नियम के बाहर क्या है, तो यह पता चलता है कि **पौलुस और दूसरे लोग विद्यमान संरचनाओं को अधिक मसीही दिशा में बदलने के लिए कड़ा परिश्रम करते हैं**। **उदाहरण के लिए, पौलुस को अपने श्रोताओं के साथ वहीं से शुरू करना पड़ता है जहाँ वे हैं, और फिर उन्हें बदलने के लिए क़ायल करना पड़ता है।** और आप इस प्रक्रिया को फ़िलेमोन, कुलुस्सियों और इफिसियों में काम करते हुए देख सकते हैं। उदाहरण के लिए, यद्यपि इन पाठों में सिर और अधीनता की भाषा का प्रयोग निश्चय ही होता है, फिर भी तर्क की दिशा इस ओर है:

1. घर के स्वामी पर अधिकाधिक कठोर नियम लगाना, ताकि उसकी शक्ति को और उसके अपनी पत्नी, बच्चों और दासों के साथ व्यवहार करने के ढंग को सीमित किया जाए;
2. घर के स्वामी को यह बोध कराना कि स्त्रियाँ, बच्चे और दास वास्तव में परमेश्वर के स्वरूप में रचे गए व्यक्ति हैं, न कि पशु या संपत्ति।

यह फ़िलेमोन में विशेष रूप से स्पष्ट होता है, जब पौलुस फ़िलेमोन से कहते हैं कि वह उनेसिमुस को इस तथ्य के आधार पर मुक्त कर दे कि वह "अब दास नहीं, बल्कि मसीह में एक भाई" है। **पौलुस सुसमाचार के ख़मीर को पहले से विद्यमान संबंधों में डालने और उन्हें बदलने का काम करते हैं।** पतियों और पत्नियों की भूमिकाओं के साथ भी ऐसा ही है, इफिसियों 5:21 और आगे। पौलुस सब मसीहियों को एक दूसरे के अधीन रहने के लिए बुलाते हैं, जिसका एक रूप पत्नियों का पतियों के अधीन रहना है, और तब यह उपदेश, "हे पतियो, अपनी पत्नियों से प्रेम रखो, जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को दे दिया ...", उसी रूप में देखा जा सकता है जो वह है – आत्म-बलिदानी अधीनता और सेवा का एक रूप। **अधीनता अब न तो लिंग-विशिष्ट है और न एकतरफ़ा**, क्योंकि पौलुस यहाँ एक ऐसी नैतिकता प्रस्तुत करते हैं, जो विद्यमान व्यवस्था के भीतर से परिवर्तन की दिशा में काम करती है (देखें कुलुस्सियों, इफिसियों और फ़िलेमोन की पत्रियों पर मेरी टीका, Eerdmans)। **इसके अतिरिक्त, हमें निरंतर ध्यान में रखना होगा कि कलीसिया में अगुवाई की संरचनाओं को जो बात**

निर्धारित करती है या करनी चाहिए, वह लिंग नहीं, बल्कि पवित्र आत्मा के अनुग्रह-वरदान और वरदान हैं। विश्वास का परिवार शारीरिक परिवार के समान नहीं है, और लिंग उसमें भूमिकाओं का निर्धारक तत्व नहीं है। निश्चय ही लिंग मसीही परिवार में कुछ भूमिकाओं को प्रभावित करता है, परन्तु जब कलीसिया की अगुवाई-संरचना पर चर्चा हो, तो यह अप्रासंगिक है। इसलिए हमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए, जब हमें पौलुस की पत्रियों में भी शिक्षिकाओं, सुसमाचार-प्रचारिकाओं, भविष्यद्वक्तिनों, सेविकाओं (स्त्री डीकनों) और स्त्री प्रेरितों के उदाहरण मिलते हैं। **पौलुस ऐसे व्यक्ति नहीं हैं, जो विद्यमान, पतित पितृसत्तात्मक व्यवस्था को बपतिस्मा देकर उसे अच्छा ठहराने में रुचि रखते हों।** ऐसी बातों पर पौलुस के विचारों का एक स्पष्ट संकेत उस बात में देखा जा सकता है, जो वे बपतिस्मा के विषय में कहते हैं – पुरानी वाचा के चिह्न के विपरीत, नई वाचा के लिए हमारे पास जो चिह्न है, वह लिंग-विशिष्ट नहीं है, और पौलुस जोड़ते हैं कि मसीह में "नर और नारी" नहीं है, ठीक वैसे ही जैसे न यहूदी है न अन्यजाति, न दास न स्वतंत्र। इसके प्रभाव बहुत बड़े हैं। वाचा के चिह्न में परिवर्तन यह संकेत देता है कि पुरुषों और स्त्रियों के विषय में वाचा का स्वरूप बदल गया है।

3) स्त्रियाँ मसीही प्रचारिकाएँ नहीं हो सकतीं, क्योंकि नए नियम के कुछ खंड इसका निषेध करते हैं।

विशेष रूप से बहुत रूढ़िवादी प्रोटेस्टेंटों (सुसमाचारवादियों, "ब्रदरन") के लिए यही असली अड़चन है। माना जाता है कि 1 कुरिन्थियों 14:33ख-36 और 1 तीमुथियुस 2:8-15 स्त्रियों को कलीसिया में शिक्षा देने और प्रचार करने से मना करते हैं।

मैं इनमें से कुछ तर्कों के पाखंड की चर्चा नहीं करूँगा, जो ऐसे बारीक भेद करते हैं जैसे: "स्त्रियों का घर पर शिक्षा देना या कोई बाइबल-अध्ययन चलाना ठीक है, परन्तु गिरजाघर के भवन में नहीं" (एक छोटी-सी ताज़ा ख़बर: नए नियम के समय में गिरजाघर के भवन थे ही नहीं, वे घरों में मिलते थे!), या इससे भी बुरा, "स्त्रियों का मिशन-क्षेत्र में शिक्षा देना और प्रचार करना ठीक है, जहाँ इसकी आवश्यकता है, परन्तु यहाँ अमेरिका में नहीं, जहाँ इसकी आवश्यकता नहीं है"। यहाँ भी तर्क पूरी तरह भटका हुआ है और पवित्रशास्त्र की किसी भी बात पर आधारित नहीं है।

परन्तु इन पाठों का क्या?

1 कुरिन्थियों 14:33ख-36 (यह मानते हुए कि यह इस पत्री का मूल अंश है, जिस पर बहुत से विद्वान पाठ-संबंधी कारणों से संदेह करते हैं। मैं संदेह करने वालों से सहमत नहीं हूँ) समस्याओं का समाधान करने वाली एक बड़ी पत्री का भाग है। पौलुस उन समस्याओं को सुधारते हैं, जो कुरिन्थुस की घरेलू कलीसियाओं में उत्पन्न हो रही हैं। ऐसी एक समस्या कुछ स्त्रियों – प्रत्यक्षतः केवल कुछ पत्नियों – के कारण होती है, जो प्रश्न पूछकर भविष्यद्वाणी (भविष्यसूचक वचन) के समय में बाधा डालती हैं। अब पौलुस 1 कुरिन्थियों 11 में पहले ही कह चुके हैं कि स्त्रियाँ मसीही आराधना में प्रार्थना और भविष्यद्वाणी कर सकती हैं, यदि वे अपनी "महिमा" (अर्थात् अपने बाल) को ढकने के लिए सिर ढकें, क्योंकि आराधना में केवल परमेश्वर की महिमा दिखाई देनी चाहिए, **और वे 1 कुरिन्थियों 14:33ख-36 में इस अनुमति को वापस नहीं लेते**। कुरिन्थुस की अधिकतर अन्यजातीय कलीसिया भविष्यद्वाणी के विषय में और किसी भविष्यद्वक्ता या भविष्यद्वक्तिन के पास जाते समय क्या उचित है, इस विषय में अपनी पहले से बनी धारणाएँ कलीसिया में साथ ले आई थी। उदाहरण के लिए, पास के डेल्फ़ी की देववाणी (ओरेकल) एक ऐसी भविष्यद्वक्तिन थी, जिससे लोग सलाह पूछने जाते थे। लोग उसके पास ऐसे प्रश्न पूछने जाते थे: क्या मैं इस पुरुष से विवाह करूँ, या क्या मैं यह भूमि ख़रीदूँ, आदि, और देववाणी उत्तर देती थी। इसलिए कुछ कुरिन्थियों के लिए यह सोचना स्वाभाविक था कि जब भविष्यद्वक्ता उनकी सभाओं में बोलते हैं, तो उन्हें उनसे प्रश्न पूछने का

अधिकार है। पौलुस का उत्तर है, नहीं: "आराधना का समय प्रश्नोत्तर का समय नहीं है, और तुम भविष्यद्वक्ताओं को बीच में टोक रहे हो। यदि तुम्हारे प्रश्न हैं, तो घर पर अपने पुरुष (संभवतः पति) से पूछो। ऐसे प्रश्नों के लिए एक समय और स्थान है, परन्तु मसीही आराधना वह नहीं है।" **निश्चय ही पौलुस इस मामले में स्त्रियों/पत्नियों को इसलिए नहीं सुधारते कि वे स्त्रियाँ हैं, बल्कि इसलिए कि इस मामले में वे ही यह समस्या उत्पन्न कर रही हैं।**

इस पाठ के विषय में कुछ और बातों पर ध्यान देना आवश्यक है: पाठ इस विषय में कुछ नहीं कहता कि स्त्रियाँ **पुरुषों के** अधीन रहें। यहाँ निर्देश यह है कि ये स्त्रियाँ चुप और अधीन रहें, जैसा व्यवस्था भी कहती है। ठीक है, पुराने नियम में कहाँ स्त्रियों के लिए यह आज्ञा है कि वे चुप रहें और पुरुषों के अधीन रहें? उत्तर: कहीं नहीं। यह पंचग्रंथ में बिल्कुल नहीं है, और कहीं और भी नहीं। पौलुस जिस बात की चर्चा कर रहे हैं, वह परमेश्वर की उपस्थिति में चुप रहना और उसके प्रेरित वचनों को सुनना है, जो इस मामले में भविष्यद्वक्ताओं और भविष्यद्वक्तिनों के द्वारा आते हैं! "यहोवा अपने पवित्र मन्दिर में है; सारी पृथ्वी उसके सामने शान्त रहे (और सुने)" ... **और परमेश्वर की शिक्षा के अधीन हो।**

और 1 तीमुथियुस 2:8-15 का क्या? इस पाठ को कभी-कभी – ग़लत ढंग से – इस बात का अंतिम प्रमाण माना जाता है कि स्त्रियाँ सेवकाई नहीं कर सकतीं। परन्तु यह भी पाठ के संदर्भ और उसकी बारीकियों को अनदेखा करता है – और यही तो मुख्य समस्या है, जब कोई अलग-अलग बाइबल-पदों से कुछ "सिद्ध" करना चाहता है। पौलुस यहाँ तीमुथियुस को निर्देश देते हैं कि वह अपने नए-नए विश्वासियों के साथ कैसे व्यवहार करे, संभवतः इफ़िसुस में (देखें पास्टरीय पत्रियों पर मेरी टीका: Letters and Homilies for Hellenized Christians, खंड 1, IVP)। 1 तीमुथियुस 2:8-15 में जो समस्या सामने आती है, उसका संबंध स्पष्ट रूप से कुछ विशेष स्त्रियों से है: उच्च पद वाली स्त्रियाँ, जो शानदार वस्त्र और सजी हुई केश-सज्जा रखती हैं और आशा करती हैं कि वे तुरंत कलीसिया में सबकी शिक्षिकाएँ बन जाएँगी। यह फिर एक सुधारात्मक खंड है, जो समस्याओं से निपटता है – यह आरंभ से ही दिखाई देता है: पहले पौलुस कुड़कुड़ाने वाले पुरुषों को सुधारते हैं, जिनसे वे प्रार्थना करवाना चाहते हैं, फिर वे इन उच्च पद वाली स्त्रियों को सुधारते हैं। पौलुस पुरुषों और स्त्रियों को समान रूप से सुधारते हैं, जब वे भूल में होते हैं। स्त्रियों के प्रति उनके सुधार के विषय में इफ़िसुस जैसे नगरों की उच्च पद वाली स्त्रियों के बारे में कुछ कहना आवश्यक है। हम जानते हैं कि ऐसी स्त्रियाँ यूनानी-रोमी संसार के धार्मिक पर्वों, मंदिरों और उपासना-विधियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थीं। वे पुजारिनें, भविष्यद्वक्तिनें, शिक्षिकाएँ, चंगाई करने वाली, अनन्त ज्योति की रखवालिनें आदि थीं। इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं कि ऐसी स्त्रियाँ मसीह की ओर फिरने के बाद आशा करती थीं कि वे कलीसिया में भी वैसा ही कर सकेंगी। समस्या यह थी: दूसरों को – चाहे पुरुष हों या स्त्रियाँ – सिखाने से पहले उन्हें स्वयं ठीक से शिक्षा पाने और सीखने की आवश्यकता थी। यह हम सबके लिए एक अच्छा सिद्धांत है। एक बार मेरा एक विद्यार्थी था, जो सेमिनरी की एक कक्षा में इसलिए झुँझलाया हुआ था कि उसे बहुत कुछ सीखना पड़ रहा था – और उसमें से बहुत कुछ उसे अनावश्यक लगता था। वह मेरे पास आया और बोला: "मुझे नहीं पता कि मुझे यह सब पहले क्यों सीखना है। मैं तो बस मंच पर चढ़ सकता हूँ, और आत्मा मुझे बोलने के लिए शब्द देगा।" मैंने उत्तर दिया: "हाँ, चार्ली (Charlie), तुम ऐसा कर सकते हो। बस अफ़सोस है कि तुम पवित्र आत्मा को काम करने के लिए और अधिक सामग्री नहीं देते!" मूल रूप से पौलुस इफ़िसुस की इन स्त्रियों से यही बात कहते हैं: उन्हें सिखाने से पहले सीखना है।

अब 1 तीमुथियुस 2:8-15 की व्याख्या के विषय में कुछ विवरण। यहाँ भी इस विषय में कुछ नहीं कहा गया कि स्त्रियाँ पुरुषों के अधीन रहें। यूनानी पाठ पर्याप्त स्पष्ट है। यहाँ "शांति" के लिए शब्द प्रयुक्त है, न कि मौन के लिए

शब्द, **और एक बार फिर बात यह है कि वे तीमुथियुस और दूसरों की अधिकारपूर्ण शिक्षा के अधीन रहें**। दूसरे, "मैं अभी अनुमति नहीं देता" वाली यूनानी क्रिया, जैसा फ़िल पेन (Phil Payne) ने बार-बार दिखाया है, ऐसी क्रिया नहीं है जिसका अर्थ इस अनुमति-न-देने का अनंत विस्तार हो। इसका अर्थ वही है जो यह कहती है: "मैं अभी अनुमति नहीं देता ..."।

क्यों नहीं? क्योंकि स्त्रियों को शिक्षा देने से पहले सीखना था। तीसरे: क्योंकि हम एक ऐसे पाठ से निपट रहे हैं जो ग़लत व्यवहार को सुधारता है, यूनानी का अनुवाद इस प्रकार होना चाहिए: "मैं स्त्रियों को (इस मामले में उन स्त्रियों को, जिनका उल्लेख केश-सज्जा, गहनों और महँगे वस्त्रों के साथ हुआ है) फ़िलहाल शिक्षा देने या (अधिकृत) पुरुषों पर अधिकार हथियाने की अनुमति नहीं देता।" **यह एक विशेषाधिकार के दुरुपयोग का निषेध है; यह मसीही शिक्षा देने के विशेषाधिकार के उचित उपयोग की बाद में अनुमति मिलने की संभावना को बाहर नहीं करता।** वास्तव में पास्टरीय पत्रियों में अन्यत्र हम अधिक परिपक्व मसीही स्त्रियों के विषय में सुनते हैं, जो कुछ सिखाती हैं। क्रिया **authenteo** यहाँ एक दुर्लभ क्रिया है, जिसका अर्थ या तो अधिकार चलाना है या अधिकार हथियाना, और यह नए नियम में केवल यहीं एक बार आती है। यह इस बात का अच्छा उदाहरण है कि बाइबल की भाषा का अध्ययन उसके बड़े संदर्भ से अलग करके क्यों नहीं किया जा सकता – इस मामले में यूनानी भाषा में अन्यत्र इसके प्रयोग के संदर्भ से। अन्यत्र यह क्रिया सुधारात्मक संदर्भ में सत्ता के दुरुपयोग से संबंधित है, किसी ऐसी भूमिका या कार्य को हथियाने से, जो दूसरों का है। यहाँ भी यही अर्थ है।

अंत में, सृष्टि-वृत्तांत, अर्थात् हव्वा की कहानी, से संबंधित तर्क का क्या? पौलुस मानकर चलते हैं कि उनके श्रोताओं में से कुछ इस कहानी को बहुत अच्छी तरह जानते हैं। इब्रानी में कहानी इस प्रकार है – भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष से संबंधित निषेध की शिक्षा केवल आदम को दी जाती है, और हव्वा को ठीक से सिखाना उसका कर्तव्य था, क्योंकि जब यह निषेध कहा गया तब वह वहाँ नहीं थी। कहानी के आगे बढ़ने पर स्पष्ट होता है कि हव्वा को ठीक से सिखाया नहीं गया था। वह वृक्ष के फल को न छूने की बात करती है, जो मूल निषेध का भाग नहीं था। अब यहाँ "बहकाई गई" शब्द महत्वपूर्ण है; पौलुस इसका प्रयोग केवल हव्वा और पतन के संबंध में करते हैं। **जिस व्यक्ति को ठीक से सिखाया नहीं गया, वह आसानी से बहकाया जाता है और ऐसे कार्य कर सकता है जो विनाशकारी हों। हव्वा के साथ यही हुआ। वह एकदम सही उदाहरण है, जिसे इफ़िसुस की उच्च पद वाली स्त्रियों के सामने रखा जा सकता था: कुछ करने से पहले उन्हें ठीक से शिक्षा पाने की आवश्यकता थी।** मैं आपको यह भी याद दिलाना चाहता हूँ कि उत्पत्ति की कहानी को शाब्दिक रूप से पढ़ें, तो उस अवसर पर आदम सीधे हव्वा के पास था और उसे रोक सकता था और रोकना चाहिए था, परन्तु उसने ऐसा नहीं किया। हव्वा ने फल तोड़ा, और उस अवसर के लिए अधिकृत शिक्षक के रूप में आदम अपनी ज़िम्मेदारी से चूक गया। निस्संदेह यही कारण है कि रोमियों 5:12-21 में पतन के लिए आदम को ज़िम्मेदार ठहराया गया है। फिर पौलुस एक विकल्प प्रस्तुत करते हैं – "परन्तु अब स्त्रियाँ बच्चा जनने के द्वारा उद्धार पाएँगी", या शायद अर्थ है "स्त्रियाँ बच्चा जनने में से होकर सुरक्षित रखी जाएँगी"। पौलुस यहाँ निश्चय ही जो नहीं कर रहे, वह है बच्चा जनने के द्वारा स्त्रियों के उद्धार की बात करना!!! इसलिए मेरे सुझाए दोनों अर्थों में से कोई भी संभव है। मेरा झुकाव इस व्याख्या की ओर है कि "जनने" से पहले आया निश्चित उपपद (आर्टिकल) एक विशेष जन्म की ओर संकेत करता है – मरियम के द्वारा यीशु का जन्म। इस प्रकार मरियम उलटी दिशा में हव्वा है। वह स्वर्गदूत की आवाज़ को मानती है, वह प्रभु की दासी है, हव्वा के विपरीत। दूसरी संभावना यह है कि पौलुस कहते हैं कि स्त्रियों पर पड़ा शाप (बच्चा जनने में पीड़ा और ख़तरा) मसीह में उलटा जा सकता है, यदि वे विश्वासयोग्य मसीही बनी रहें और प्रभु पर भरोसा रखें।

हर स्थिति में यह पाठ सब युगों में सब परिस्थितियों में सब स्त्रियों के लिए प्रचार करने और शिक्षा देने का निषेध नहीं है। यह एक बहुत विशिष्ट निषेध है, और निस्संदेह पौलुस आज भी उन स्त्रियों या पुरुषों से यही कहते, जो पहले ठीक से सीखे बिना परमेश्वर के वचन की शिक्षा देने या प्रचार करने का प्रयास करते हैं!!!

उत्पत्ति की कहानी के विषय में एक बात और। लेखक हमें बताता है कि पतन का प्रभाव पितृसत्ता है। यह सृष्टि की व्यवस्था के लिए परमेश्वर की मूल योजना नहीं थी। पाठ हमें बताता है कि मूल शाप (मूल आशीष नहीं) का एक भाग हव्वा पर होगा: "तेरी लालसा तेरे पति की ओर होगी, और वह तुझ पर प्रभुता करेगा!" इस प्रकार प्रेम करना और सँजोना, लालसा करने और प्रभुता करने में बिगड़ गया!!! यह संबंध पर पाप का प्रभाव है, न कि संबंध के जन्मजात लैंगिक गुण या विशेषताएँ।

एक बात और, क्योंकि हम पास्टरीय पत्रियों के इन पाठों की बात कर रहे हैं। कभी-कभी यह तर्क सुनने को मिलता है: 1 तीमुथियुस की पत्री यह मानकर चलती है कि प्राचीन ऐसे पुरुष होंगे जो अपनी एकमात्र पत्नी के प्रति विश्वासयोग्य हों; इसलिए कलीसियाओं में केवल पुरुष ही प्राचीन हो सकते हैं। यह इस बात को पूरी तरह भूल जाना है कि पौलुस, चाहे इफ़िसुस में हों या क्रेते में, एक मिशनरी के रूप में एक प्रबल पितृसत्तात्मक संस्कृति के भीतर बोल रहे हैं। उनका सिद्धांत यह है कि वहीं से शुरू किया जाए जहाँ लोग पहले से हैं, न कि वहाँ से जहाँ वह उन्हें देखना चाहेंगे। इसका अर्थ है: वह संस्कृति में पहले से मौजूद पुरुष अगुवाई से शुरू करते हैं, जब तक कि सुसमाचार का ख़मीर पूरी तरह अपना काम करके भीतर से चीज़ों को बदल न दे। इसलिए यह स्वाभाविक ही है कि तीमुथियुस और तीतुस इन बिल्कुल नई कलीसियाओं में पहले पुरुषों को ही अगुवों के रूप में नियुक्त करेंगे। इसका अर्थ यह नहीं कि यह सदा-सर्वदा ऐसा ही रहना चाहिए। परन्तु नए विश्वासियों को पहले प्रेमपूर्वक समझाकर इस बात के लिए राज़ी करना था कि स्त्रियों का ऐसी भूमिकाएँ निभाना ठीक है। फिर भी आप देख सकते हैं कि पौलुस पहले से ही इस दिशा में आगे बढ़ा रहे हैं: रोमियों 16:1-2 में वह फीबे नाम की एक अगुवा स्त्री का उल्लेख करते हैं, जो कुरिन्थुस की कलीसियाओं में सेविका (डीकन) है। और संभवतः पास्टरीय पत्रियों में जहाँ प्राचीनों और सेवकों की चर्चा है, वहाँ भी सेविकाओं का उल्लेख है। जैसा मैंने पहले कहा: केवल यह आँकना पर्याप्त नहीं कि पौलुस क्या कहते हैं। उसे उसके सांस्कृतिक संदर्भ में पढ़ना और यह पूछना ज़रूरी है: जब पौलुस सुसमाचार को परिस्थिति पर लागू करते हैं, तो वह संबंधों में किस प्रकार के बदलाव लाना चाहते हैं?

जैसा मैंने बहुत वर्षों में सीखा है ...., कलीसिया में समस्या सशक्त और वरदान-प्राप्त स्त्रियाँ नहीं हैं। हमें वे सब चाहिए जो हमें मिल सकें, और यदि वे न होतीं, तो बहुत सी कलीसियाएँ कब की बंद हो चुकी होतीं। मुझे बाबुश्काओं – मॉस्को की बैपटिस्ट कलीसिया की दादियों – से हुई भेंट बहुत स्पष्ट याद है, जिन्होंने दरवाज़े पर खड़े होकर स्टालिन को कलीसिया बंद करने से रोक दिया था, और उसकी टुकड़ियाँ कलीसिया को बंद करने के लिए भीतर नहीं घुस सकीं। कलीसिया में सशक्त, वरदान-प्राप्त स्त्रियों के लिए परमेश्वर का धन्यवाद हो। **नहीं, कलीसिया में समस्या सशक्त स्त्रियाँ नहीं हैं, बल्कि कमज़ोर पुरुष हैं, जो सशक्त स्त्रियों से ख़तरा महसूस करते हैं और जिन्होंने विभिन्न साधनों से, संदिग्ध व्याख्या से भी, उन्हें कलीसिया में अपने वरदानों और योग्यताओं का प्रयोग करने से रोकने का प्रयास किया है।**

यदि आप इस विषय में और जानना चाहते हैं, तो मेरी टीकाएँ पढ़िए या आम पाठकों के लिए मेरा संक्षिप्त संस्करण: Women and the Genesis of Christianity (Cambridge University Press, 1990)।

इतना कहना पर्याप्त है।

मूल: “Why Arguments against Women in Ministry Aren’t Biblical”, ब्लॉग “The Bible and Culture” (Patheos), 2 जून 2015। बेन विदरिंगटन (Ben Witherington) की अनुमति से जर्मन अनुवाद: Hans-Jörg Ronsdorf, 20 अप्रैल 2021।